साम्प्रदायिक सद्भाव में शिक्षा की भूमिका

डॉ0 रूद्र प्रताप यादव*

सारांश

भारत की संस्कृति एवं सभ्यता विश्व में सबसे प्राचीनतम और महान है। भारत विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है, आवादी की दृष्टि से इसका दूसरा स्थान है। संसदीय लोकतंत्र में अपनी गहन आस्था और प्रतिबद्धता के लिए विख्यात भारत विविधता में एकता का अनूठा संगम है। आधुनिक भारत के निर्माताओं को बौद्धिक सूझबूझ एवं प्रयासों का ही परिणाम है कि स्वतन्त्रता के बाद हम अपने देश की विविधता और अखण्डता की रक्षा करने में सफल रहे।

मैं समझता हूँ कि सरकार और समाज की शिक्षण संस्थाओं को निरन्तर इस पर नजर रखनी चाहिए और धर्म के नाम पर हिंसा करने वालों के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। कोई भी धर्म हिंसा की इजाजत नहीं देता। कोई भी धर्म नफरत का प्रचार नहीं करता और न हीं दूसरों से वैरभाव रखने की बात कहता है। जो लोग धार्मिक चिन्हों और मंचों का इस्तेमाल हिंसा, धार्मिक द्वेश और विवादों के लिए करते हैं वे अपने धर्म के सच्चे प्रवक्ता नहीं है। लेकिन हम यह भी जानते हैं कि हमारे समाज सहित सभी समाजों में असामन्जस्य फैलाने वाले लोग होते हैं। इसलिए यह और भी महत्वपूर्ण है कि शिक्षा जगत में जो लोग आज पुरस्कार प्राप्त कर रहे हैं, हम ऐसे लोगों को मान्यता दे और उनकी प्रशंसा करें, जो साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए निःस्वार्थ भाव से कार्य करते हैं। यह हमारा कर्तव्य है कि हम ऐसे विवेकशील लोगों को प्रोत्साहन दें।

संसार के सभी दार्शनिक, शिक्षाशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों तथा वैज्ञानिकों एवं समाज सुधारकों ने एकमत होकर इस बात को स्वीकार किया है कि बालकों में साम्प्रदायिक सद्भावना को विकसित किया जा सकता है। वही दूसरी ओर इससे भी अतिआवश्यक यह है कि प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र के प्रत्येक नागरिकों की कठिनाइयों का अनुभव करें तथा उनकी प्रशंसनीय बातों का सम्मान करें। इस प्रकार की साम्प्रदायिक सद्भावना को विकसित करने के लिए केवल शिक्षा ही एकमात्र महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली साधन है। इसका कारण यह है कि विद्यालय का एक विशेष वातावरण होता है। अतः विद्यालय सर्वोत्तम सांस्कृतिक तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है और निष्पक्षता तथा सत्य के क्षेत्रों में समाज के साधारण स्तर से बहुत ऊंचा होता है। अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा के द्वारा ही साम्प्रदायिक तनाव को कम कर साम्प्रदायिक सद्भावना को बढ़ावा दिया जा सकता है।

प्रस्तावना

<u>सम्प्रदाय का अर्थ है–</u> विशेष रुप देने योग्य, सामान्य रुप से नहीं अर्थात् हिन्दूमतावलम्बी के घर में जन्म लेने वाले बालक को हिन्दू धर्म की ही शिक्षा मिल सकती है दूसरों को नहीं। इस प्रकार से साम्प्रदायिकता का अर्थ हुआ एक पन्थ, एक मत, एक धर्म या एक वाद और न केवल हमारा भारत देश ही अपितु विश्व के अनेक देश भी साम्प्रदायिक हैं। इस प्रकार साम्प्रदायिकता का विश्व व्यापी रुप है।

भारत की संसदीय लोकतंत्र विश्व के उन अनेक देशों के लिए प्रेरक रहा है, जो अपने सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विभिन्नताओं के कारण समय–समय पर होने वाले संघर्षों का समाधान खोजने का प्रयास कर रहे है। उपनिवेशवाद से मुक्त देशों के लिये भारत प्रकाश पुंज रहा है। भारत में स्वतंत्रता के 70 वर्षों के बाद भी चुनाव के माध्यम से सत्ता परिवर्तन और सत्ता हस्तांतरण जिस सहजता से होता है वह अपने आप में विलक्षण है। जबकि भारत के साथ या उसके बाद औपनिवेशिक गुलामी से मुक्त कई देश अपने लोकतन्त्र को बचा नही पाये और सैन्य तानाशाही या एक दलीय शासन में उनका लोकतंत्र बदल गया।

भारत के संविधान में भारत को एक 'सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पंथ निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य' बनाने का संकल्प किया गया है। जिसमें कहा है कि इसके लिए तथा उसके समस्त नागरिकों, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्म समर्पित करते हैं।

*प्रवक्ता, बिपिन बिहारी इन्टर कॉलेज, झाँसी (उ0प्र0)

वर्तमान में साम्प्रदायिकता के स्वरुप को देखा जाए तो केवल भारत में ही नही अपितु सारे विश्व में साम्प्रदायिकता का जहरीला सांप फुफकार रहा है। हर जगह इसी कारण आतंकवाद ने जन्म लिया है। इससे कहीं हिन्दू–मुसलमान में तो, कही सिक्खों–हिन्दुओं या अन्य जातियों में दंगे–फसाद बढ़ते ही जा रहे हैं। इसलिए आज विश्व में प्रायः सभी जातियों और धर्मों में साम्प्रदायिकता का मार्ग अपना लिया है। इसके पीछे कुछ स्वार्थी और विदेशी तत्व शक्तिशाली रुप से काम कर रहे हैं।

उपसंहार– साम्प्रदायिकता मानवता के नाम पर कलंक है। यदि इस पर यथाशीघ्र विजय नही पायी गई तो यह किसी को भी समाप्त करने से बाज नहीं आयेगा। साम्प्रदायिकता का जहर कभी उतरता नहीं है। अतएव हमें ऐसा प्रयास करना चाहिए कि यह कहीं किसी तरह से फैले ही नहीं। हमें ऐसे भाव पैदा करने चाहिए जो इसको कुचल सकें। हमें ऐसे भाव पैदा करना चाहिए–

मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिन्दी है हम वतन है, हिन्दोस्ता हमारा।।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था– ''सम्प्रदायवाद हाल के दिनों में उग्र रुप लेने लगा है। अराजकता एक दैत्य है, जिसके कई रुप हैं। अंततः यह सभी के लिए दुखदायी है, उनके लिए भी, जो शुरु में इसके लिए जिम्मेदार होते हैं।''

साम्प्रदायिक सद्भाव की आवश्यकता

वयं राष्ट्रे जाग्रयाम पुरोहिताः।

यजुर्वेद की इस उक्ति का आशय है– हम अपने राष्ट्र में सजग, सावधान होकर पुरोहित, अगुआ बनें। यह उक्ति जहाँ एक ओर हमारे मानस को राष्ट्र से जोड़ती है, वही हमें समवेत रुप से उसके लिए सक्रिय होने का आह्वाहन भी करती है।

राष्ट्रीय सद्भावना मूलतः भावात्मक है। वस्तुतः यह एक सामुदायिक भावना है जो देश के नागरिकों के मन में विकसित होती है। जब किसी राष्ट्र अथवा देश के नागरिक पारस्परिक एकतत्व का बोध करते हैं, सुख–दुख में साझीदार होते हैं समष्टि की कल्याण साधना में संलग्न होते हैं तथा राष्ट्रहित के लिए सर्वस्व बलिदान करने को तत्पर होते हैं, तब उनमें वास्तविक राष्ट्रीय सद्भावना के दर्शन होते हैं। राष्ट्रीय उत्थान एवं राष्ट्रीय संकट की घड़ी में जब सारा राष्ट्र एक तन, एक मन होकर खड़ा हो जाता है, तब राष्ट्रीय सद्भावना का रुप निखरता है। सच तो यह है कि साम्प्रदायिक सद्भावना ही राष्ट्र है। नागरिकों की अखण्ड एकता का पुष्प ही राष्ट्र–देवता को शोभा एवं गरिमा प्रदान करता है।

साम्प्रदायिक सद्भावना एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के द्वारा जनता के हृदय में एकता, सुदृढ़ता तथा संशक्ति के भाव का विकास होता है। इसके फलस्वरुप उसके मानस में सम–नागरिकता तथा राष्ट्रीय निष्ठा के भाव उदित होते हैं। वस्तुतः साम्प्रदायिक सद्भावना की भावना मूलतः अर्जित है। अतएव मनो–वैज्ञानिक होने के साथ यह मुख्य रुप से शैक्षिक प्रक्रिया है। यह भावना जन्मजात अथवा नैसर्गिक नहीं है। यह भावना तो मानव अपने समाज से विभिन्न स्रोतों के माध्यम से प्राप्त करता है।

साम्प्रदायिक सद्भावना की शैक्षिक प्रक्रिया कई स्वरुपों में चलती है। इसका एक स्वरुप तो अनौपचारिक है इसमें परिवार, समाज, सांस्कृतिक आयोजन तथा अन्य प्राकृतिक–सामाजिक साधन सहायक होते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा मानव सर्वप्रथम परिवार, समाज तथा राष्ट्र के स्वरुप के क्रम–क्रम से दर्शन करता है। वस्तुतः साम्प्रदायिक सद्भावना राश्ट्र के लिए आत्म–बलिदान की ललक यहीं उत्पन्न होती है। दूसरी प्रक्रिया है, औपचारिक शिक्षा की। विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में निर्धारित पाठ्यक्रम तथा समयतालिका के अनुरुप शिक्षा ग्रहण करना इसके अन्तर्गत आता है। यह प्रक्रिया को पुष्ट करती है तथा हमारे विचारों को विकास प्रदान करती है। यह हमारे बौद्धिक धरातल को और अधिक ऊँचा तथा विस्तृत बनाती है। यह राष्ट्रीय तथा सामाजिक मूल्यों को स्पष्ट तथा निश्चित बनाती है इस प्रकार हम देखते हैं यह प्रक्रिया शैक्षिक होने के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक भी है। यह सच भी है कि साम्प्रदायिक सद्भावना मूलतः एक भावात्मक है, और भावनाओं का जनक है– हमारा मन।

गत सौ वर्षों के इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि संसार के उनके महत्वाकांक्षी राष्ट्रों ने अपने नागरिकों में साम्प्रदायिक सद्भावना को विकसित करने के लिए शिक्षा की व्यवस्था अपने–अपने निजी ढंगों से की है। इन राष्ट्रों में बालकों को आरम्भ से ही इस बात की शिक्षा दी जाती थी कि हमारा देश अच्छा

अथवा बुरा। अथवा हमारा देश अन्य देशों में श्रेष्ठतम है। इस प्रकार ही शिक्षा प्राप्त करके बालकों में संकुचित सद्भावना विकसित हो गई जिसके परिणामस्वरुप विश्व में दो महायुद्ध हुए और आज भी तीसरे महायुद्ध के बादल आकाश में मंडरा रहे हैं। चूंकि युक्त दोनों महायुद्धों के कारण मानव के मानवीय तथा राजनीतिक अधिकारों का हनन ही नहीं हुआ अपितु उसे विभिन्न अत्याचारों को भी सहना पड़ा, इसलिए अब संसार के सभी कर्णधार इस बात का अनुभव करने लगे हैं कि संकुचित सद्भावना की अपेक्षा विस्तृत सद्भावना का विकास किया जाये जिससे संसार में समस्त नागरिकों में परस्पर द्वेश, घृणा, ईर्श्या तथा लम्पटता के स्थान पर प्रेम सहानुभूति, उदारता तथा सद्भावना विकसित हो जाये और संसार में सुख शांति तथा स्वतंत्रता एवं साम्प्रदायिक समानता बनी रहे। रोमा रोला ने इस तथ्य की पुष्टि करते हुए लिखा है– ''भयंकर विनाशकारी परिणाम वाले दो विश्व युद्धों ने कम से कम यह सिद्ध कर दिया है कि क्षुद्र और आक्रमणकारी राष्ट्रीयता के संकीर्ण बंधनों को तोड़ डालना चाहिए तथा प्रेम, दया एवं सहानुभूति पर आधारित मानव सम्बन्धों को विकास करने के लिए मानव जाति के स्वतंत्रता संघ का निर्माण किया जाना चाहिए।''

वर्तमान भारत में साम्प्रदायिक सद्भावना की अति आवश्यकता है एक सबल तथा सुगठित देश के निर्माण के हेतु सामाजिक तथा राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भावना एक अत्यन्त आवश्यक है। वस्तुतः समस्त राष्ट्रीय प्रगतियों का मूल स्रोत यही है।

साम्प्रदायिक सद्भाव में एक मात्र साधन 'शिक्षा'

संसार के सभी दार्शनिक, शिक्षाशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों तथा वैज्ञानिकों एवं समाज सुधारकों ने एकमत होकर इस बात को स्वीकार किया है कि बालकों में साम्प्रदायिक सद्भावना को शिक्षा के द्वारा ही श्रेष्ठतम स्तर पर लाया जा सकता है। दूसरी ओर इससे भी आवश्यक है कि प्रत्येक राश्ट्र का नागरिक प्रत्येक नागरिक की कठिनाइयों का अनुभव करें तथा उनकी प्रशंसनीय बातों का आदर करें। इस प्रकार की साम्प्रदायिक सद्भावना को विकसित करने के लिए शिक्षा ही एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली साधन है। इसका कारण यह है कि विद्यालय का एक विशेष वातावरण होता है। अतः विद्यालय सर्वोत्तम सांस्कृतिक तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है और निष्पक्षता तथा सत्य के क्षेत्रों में समाज के साधारण स्तर से बहुत ऊँचा होता है।

यूनेस्कों द्वारा प्रकाशित 'टूवड्र्स वर्ल्ड अंडरस्टेडिंग'

नामक पत्रिका में ही इसी आशय की पुष्टि करते हुए लिखा गया है– 'स्कूल आस–पास की संस्कृति में निहित सर्वोत्तम तत्वों को व्यक्त कर सकते हैं और साधारणतः करते भी है। वे सत्य ईमानदारी और निष्पक्षता में समाज के सामान्य स्तर से ऊँचे होने चाहिए और साधारणतः होते भी हैं। वे लोगों के मानदंडों और मूल्यों को काफी ऊँचा उठाने का प्रयास करते हैं।'

साम्प्रदायिक सद्भावना मूलतः भावनात्मक है, अतः मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक है। वस्तुतः साम्प्रदायिक सद्भावना किसी भी राष्ट्र के नागरिकों के मानस में विकसित होती है, आचरण तो मात्र उसकी वाह्य अभिव्यक्ति है। साम्प्रदायिक सद्भावना तथा शिक्षा में अन्योन्याश्रित संबंध है। सच तो यह है कि किसी भी राष्ट्र के भावी नागरिकों के अन्दर स्वस्थ्य एवं सही सद्भावना का विकास शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। कहा भी जाता है– जैसी शिक्षा, वैसे नागरिक, वैसा राष्ट्र। वस्तुतः शिक्षा मानव के जीवन–क्रम का निर्धारण करती है। जहाँ दोशपूर्ण शिक्षा पद्धति उसे शक्ति, विकास एवं समृद्धि प्रदान करने में पूर्ण सक्षम भी है। अतः साम्प्रदायिक सद्भावना की स्थाई एवं प्रभावकारी उपलब्धि का एकमात्र प्रभावकारी साधन है।

भाटिया तथा नारंग की उक्ति उक्त विचारों की पुष्टि ही करती है– 'शिक्षक राष्ट्र का निर्माण विद्यालय कक्षों में होता है'।

तात्पर्य है कि विद्यालयों में ही किसी भी राष्ट्र के भावी नागरिकों को साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता, देश–प्रेम तथा पारस्परिक सहयोग के धर्म में वास्तविक रुप से दीक्षित किया जाता है। अतः ठोस तथा सही शैक्षिक कार्यक्रम के द्वारा ही छात्रों में सच्ची साम्प्रदायिक सद्भावना के भाव सम्भव हो सकते है।

साम्प्रदायिक सद्भावना तथा राष्ट्रीय शक्ति के विकास में शिक्षा की भूमिका सर्वमान्य है। विद्यालयों में हम कोमलमति नन्हें छात्रों को शिक्षा देते हैं उस काल में उनके मन पर जो छाप पड़ती है, जो प्रभाव पड़ता है, वह

स्थाई होता है। इतना ही नहीं, उनकी उस काल की आदतें, मान्यताएं तथा चिन्तन दिशा उनके भावी जीवन को आशातीत रुप से प्रभावित करती है।

अंग्रेजी के महान कवि वड्र्सवर्थ ने कहा भी है– ''द चाइल्ड इज फादर आफ दी मैन'' (शिशु मनुष्य का पिता है) सचमुच शिशु ही तो विकसित होकर पूर्ण मानव होता है। मानव में वे ही समस्त आदतें, मान्यतायें, प्रभाव, चिन्तन–पद्धति आदि बनी रह जाती है, जिन्हें वह अपने प्रारम्भिक दिनों में ग्रहण करता है। शैशवस्था में जीवन–पर्यन्त बना रह जाता है। आधुनिक मनोविज्ञान के आलोक में यह कहा जा सकता है कि शिशु के मन में डाला गया राष्ट्र–प्रेम एवं साम्प्रदायिक सद्भावना का रसायन विकसित नागरिक के चिन्तन एवं आचरण में अपेक्षित निखार तथा सौन्दर्य लाने में समर्थ होगा।

साम्प्रदायिक सद्भावना की शिक्षा से वास्तव में तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जो राष्ट्र के नागरिकों में सद्भावना बढ़ाए तथा उन्हें पारस्परिक सहयोग एवं समाज–सेवा की प्रेरणा दे ऐसी शिक्षा राष्ट्र–निर्माण, राष्ट्र–उत्थान तथा राष्ट्र–गौरव की भावना का उद्रेक करती है। साम्प्रदायिक सद्भावना तभी सम्भव है, जब राष्ट्र के अन्तर्गत विभिन्न जाति, धर्मावलम्बी, क्षेत्र, भाशा–भाशी आदि राष्ट्र के प्रेम–भावना रखें तथा आपसी द्वेशों का परित्याग कर दें। इस प्रकार की भावना को जाग्रत करना शिक्षा का ही कर्तव्य है। शिक्षा ही राष्ट्र की विभिन्न इकाईयों के बीच एकता को दृढ़ करने का साधन हो सकती है। शिक्षा के द्वारा ही आधुनिकतम वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति सम्भव है।

साम्प्रदायिक सद्भाव हेतु सुझाव

1. एक राष्ट्र, अनेकता में एकता की भावना।
2. जन–साधारण के जीवन–स्तर का सतत उन्नयन तथा बेरोजगारी की समाप्ति एवं क्षेत्रीय विशमताओं का अवनयन।
3. नागरिकों के मूल्यों एवं कर्तव्यों के प्रति आस्था तथा क्षेत्रीय निष्ठा के स्थान पर सम्पूर्ण राष्ट्र के प्रति निष्ठा।
4. सुन्दर एवं निष्पक्ष प्रशासन तथा सबके प्रति वास्तविक समानता के व्यवहार का आश्वासन।
5. राष्ट्र के प्रति तबकों की संस्कृतियों, रीतियों तथा जीवन क्रमों के बीच पारस्परिक सद्भावना तथा आदर–भाव।
6. समस्त राष्ट्र में भिन्न–भिन्न रंग–रुप तथा जाति एवं धर्म के लोग रहते हैं, परन्तु उन सबकी मानवीय आत्मा एक है।
7. प्रत्येक मनुष्य में प्रेम, दया, सहानुभूति तथा मित्रता आदि मानवीय गुण पाये जाते हैं, इन मानवीय गुणों को किसी सीमा तक नहीं बांधा जाये।
8. साम्प्रदायिक सद्भावना को विकसित करने के लिए नाटकों तथा वाद–विवादों का आयोजन किया जाये।
9. विघटनकारी प्रवृत्तियों को दूर करने के लिए फिल्में तथा समाचार पत्रों का प्रयोग किया जाये।
10. सरकारी पदों पर नियुक्तियां धार्मिक, प्रान्तीय तथा जातीयता एवं सम्प्रदायिकता आधारों पर न की जायें।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः शिक्षा तथा साम्प्रदायिक सद्भावना में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। शिक्षा के माध्यम से ही विकासोन्मुख एवं कोमलमति छात्र–छात्राओं के अन्दर साम्प्रदायिक सद्भावना की सुदृढ़ भावना का विकास सम्भव है। विश्व के विकसित देशों में भी इस सत्य को स्वीकार किया गया है तथा वहां भी शिक्षा प्रणाली भी अपेक्षित परिश्कार एवं परिवर्तन कर छात्रों में साम्प्रदायिक सद्भावना की भावना को प्रभावकारी ढंग से विकसित किया जा सकता है। अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन आदि देशों की शिक्षा–प्रणाली में इस दिशा में किये गये परिष्कार ध्यातव्य हैं। सर्वमान्य निष्कर्ष है कि उपयुक्त शिक्षा की आधार शिक्षा पर ही साम्प्रदायिक सद्भावना का प्रकाश स्तम्भ खड़ा किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प्रो0 आनन्दी सिंह, 'भारत की राष्ट्रीय एकता और शिक्षा', संस्करण–2014, पुस्तक प्रतिष्ठान, 4268.ठध्3 दरियागंज, नई दिल्ली–110002.

के0एल0 कमल, 'गांधी चिन्तन', रामचन्द्र अग्रवाल, संस्करण–1995, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, एस0एम0एस0 हाइवे जयपुर–302003.

डॉ0 नरेश कुमार, 'शिक्षा की आवश्यकताएं', संस्करण–2001, विज्ञान भारती बी–78 सूर्य नगर, गाजियाबाद (उ0प्र0)।

अटल बिहारी वाजपेयी व डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, 'नयी चुनौती नया अवसर', संस्करण–2003, सरस्वती भंडार, गांधी नगर, दिल्ली–110031.

डॉ0 नरेश कुमार, 'राष्ट्रीय शिक्षा', प्रथम संस्करण–2002, विक्रम प्रकाशन ई 11/5 कृपा नगर, दिल्ली–110032.

जेवियर–समाज सेवा संस्थान, 'शिक्षा के सिद्धान्त', नई दिल्ली।

योगेश बवेजा, 'डिजायन एवं राष्ट्रीय सूचना', केन्द्र ए–खण्ड शास्त्री भवन, नई दिल्ली।

ए0 अन्नामलाई, 'अहिंसक पथ के प्रेरक : महात्मा गांधी, राष्ट्रीय गांधी', संग्रहालय राजघाट, नई दिल्ली।

दीपक राजदान, 'राष्ट्रीय एकता दिवस', 31 अक्टूबर विशेष लेख।